मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट–15

(प्रथम प्रश्न-पत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम)

DTVF OPT-21 **M1-HL15**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Ravi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address):

परीक्षा केंद्र एवं दिनांक (Test Centre and Date): Delhi 30/12/2021

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2021] [RollNo. UPSC (Pre) Exam-2021]:

6	6	2	4	5	8	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the **Admission** Certificate which must be stated clearly*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet **must** be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 155½ टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures) E-51

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures) R-11

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर काफी अच्छे हैं।
पाठ्यक्रम पर पकड़ उत्कृष्ट है।
विश्लेषण-क्षमता शानदार है।
भूमिका और निष्कर्ष प्रभावशाली हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण आकर्षक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राजभाषा हिंदी और देवनागरी अंक

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार 'संघ की राजभाषा हिंदी होगी'। किंतु, इसके साथ यह भी उपबंध किया गया कि 'संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त संख्याओं का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय होगा।' जैसे - 1, 2, 3, 4 आदि।

हालांकि संविधान सभा में ही देवनागरी अंकों (१, २, ३) आदि को संवैधानिक मान्यता प्रदान करने के पक्ष में आवाजें उठी। इनमें सर्वप्रमुख योगदान पुरुषोत्तम दास टंडन, सेठ गोविंददास आदि हिंदी प्रेमियों का था।

निम्न कारणों से अन्तर्राष्ट्रीय अंक अपनाए गये

(i) ये अंक संपूर्ण भारत में प्रचलित हो गये थे।

(ii) विज्ञान व तकनीकी विकास के स्तर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पर गणित, भौतिक विज्ञान आदि के स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग हेतु।

(iii) विभिन्न क्षेत्रों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय अंकों के समर्थन में मत देना।

इस प्रकार देवनागरी अंकों को अपनाने की मांग 1963, 1965 में राजभाषा अधिनियमों के समय भी उठी किंतु आज भी संविधान में अंकों का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय ही है।

सरकारों को पर्याप्त विचार-विमर्श के उपरांत इस पर निर्णय लेना चाहिये।

6/10

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

1893 में अपनी स्थापना के उपरांत से ही काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने हिंदी के विकास में बहुआयामी योगदान दिया है। इसकी स्थापना में बाबु श्यामसुंदर दास, ठाकुर शिवप्रसाद सिंह व पं. रामचन्द्र शर्मा का प्रमुख योगदान है।

लिपि में प्रमुख योगदान :- 1945 में सभा द्वारा 'नागरी लिपि सुधार समिति' का गठन किया गया। इसमें निम्न निर्णय व सुझाव दिये गये।

(क) श्रीनिवास व डॉ. गोरखनाथ के सुझावों को स्वीकार न किया जाये।

श्रीनिवास (काशी) जी का सुझाव - सभी महाप्राण व्यंजनों को अल्पप्राण के नीचे 'ऽ' शब्द लगाकर व्यक्त किया जाये।

डॉ. गोरखनाथ का सुझाव :- मात्रा व्यवस्था को व्यंजन से अलग लिखा जाये। उदाहरण

रानी - 'र ा न ी'

(ख) सभी व्यंजनों को खड़ी पाई युक्त बनाने का सुझाव :- उदाहरण के लिये 'ट' आदि

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वर्ण खड़ी पाई युक्त नहीं है

(ग) अर्द्ध-व्यंजन दर्शाने के लिये व्यंजनों की पाई को हटा देना चाहिये। उदाहरण 'प' — 'ट'

(घ) सभी स्वर 'अ' चिह्न से लिखे जाने चाहिये व इसी में मात्राओं का समायोजन किया जाना चाहिये।

उदाहरण - अ, आ, अि, अु आदि।

हालांकि उपर्युक्त सुझाव स्वीकार नहीं हुए किन्तु प्रयासों की दृष्टि से काशी नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान अप्रतिम है।

Good A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु हिंदी साहित्य सम्मेलन के सुझाव

देवनागरी लिपि में जो 20वीं शताब्दी में सुधार के संस्थागत प्रयास हुए उसमें हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का योगदान अद्वितीय है।

सुधार के प्रयास :- सम्मेलन द्वारा 1935 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'नागरी लिपि सुधार उपसमिति' का गठन किया गया और निम्न सुझाव दिये गये।

(क) 'अ' की बारहखड़ी का प्रयोग किया जाये।

(ख) 'ध' व 'भ' में गुजराती घुंडी का प्रयोग किया जाये।

(ग) संयुक्त स्वर में ऊपर-नीचे स्वर लगाने ('ट्ट', 'ड्ड') की परंपरा समाप्त कर हलंत का प्रयोग किया जाये।

उदा.- बद्ध, कबड्डी।

(घ) 'पंचम वर्ण' के स्थान पर अनुस्वार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का प्रयोग किया जाये।

(ङ.) शिरोरेखा लेखन में न रहे किंतु मुद्रण में बनी रहे।

(च) मात्रा व्यवस्था में सुधार किया जाये।

(छ) जिन व्यंजनों में लिखने में द्वैतता की समस्या आती है, उन्हें सुधारा जाये।

इस प्रकार हिंदी साहित्य सम्मेलन ने काका कालेलकर, सेठ गोविंददास, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय प्रभृति विद्वानों के सहयोग से लिपि विकास में अतुलनीय योगदान दिया।

6/10 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा व बोली में अंतर करें तो हम पाते हैं कि यह अंतर वस्तुतः 'भाषा वैज्ञानिक' न होकर 'समाजभाषावैज्ञानिक' है। जब कोई बोली विभिन्न सामाजिक राजनीतिक कारणों से अपनी अन्य बोलियों से उच्च स्थान प्राप्त कर लेती है तो वह भाषा का दर्जा प्राप्त कर लेती है। उदाहरण - आधुनिक काल में विभिन्न राजनीतिक कारकों व नवजागरण के प्रभाव में खड़ी बोली का भाषा के रूप में विकास।

अन्य अंतर

भाषा	बोली
1. मानक व परिष्कृत रूप होता है।	स्थानीय व आंचलिक स्वरूप
2. निश्चित व्याकरण होता है।	. आवश्यक नहीं
3. विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र होता है।	. सीमित स्थानीय रूप
4. निश्चित लिपि होती है	. होना आवश्यक नहीं

Copyright - Drishti The Vision Foundation

भाषा	बोली
5) शासकीय मान्यता प्राप्त होती है। उदा० चीन की मंदारिन इजराइल की हिब्रू	• आवश्यक नहीं है।
6) प्रयोग का क्षेत्र विविध क्षेत्रों में - आर्थिक सामाजिक आदि।	• प्रयोग सीमित व स्थानीय व्यवहारों में।
7) वस्तुनिस्ठता अधिक	• ध्वनि आदि में आत्मनिष्ठता अधिक।
8) वैज्ञानिक व तकनीकी विकास होता है	• उतना विकास नहीं हो पाता है।

इस प्रकार इन दोनों में अंतर मुख्यत: विकास के स्तरों का ही दिखाई देता है

V. Good

6½ / 10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर

राष्ट्रभाषा से तात्पर्य है- "वह भाषा जो राष्ट्र की प्रमुख भाषा होती है, जिसमें राष्ट्र के व्यवहार निभाये जाते हैं और राष्ट्र की सामाजिक संस्कृति समाई होती है।"

उदा. - जर्मनी - जर्मन भाषा

राजभाषा से तात्पर्य - "शासक या संविधान द्वारा सरकारी, कार्यालयी व प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त होने वाली मान्यता प्रदान की गई भाषा से है।"

उदा० - भारत में हिंदी।

· अल्प भाषायी विविधता वाले देशों में दोनों स्तरों पर एक ही भाषा विद्यमान होती है किंतु भारत जैसे देश में भाषायी विविधता के कारण स्थिति अलग है। यहाँ आठवीं अनुसूची में वर्णित सभी भाषाएँ राष्ट्र की भाषाएँ हैं जबकि हिंदी 'राजभाषा' है।

प्रमुख अंतर

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
(i) ~~विविधता~~ निश्चित व वस्तुनिष्ठ अर्थ होना आवश्यक नहीं	- सभी शब्दों का अर्थ वस्तुनिष्ठ, पारिभाषिक निश्चित।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) राष्ट्र के सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहारों में प्रयुक्त। उदा. त्यौहार, पर्व आदि।	– कार्यालयी व प्रशासनिक प्रयोगों में
(iii) यह दर्जा किसी विदेशी को नहीं मिल सकता।	– विदेशी को भी मिल सकता है – मध्यकाल – फारसी – अंग्रेजी शासन – अंग्रेजी
(iv) राजनीतिक मान्यता प्राप्त होना आवश्यक नहीं।	– मान्यता प्राप्त होती है।
(v) परिवर्तन मंद गति से होता है।	– परिवर्तन आदेश द्वारा भी हो सकता है चीन में 'मंदारिन'।
(vi) शब्द संपदा स्थानीय होती है	– पारिभाषिक

इस प्रकार दोनों संकल्पनाएँ अपने-अपने स्तर पर भिन्नता धारण करती है।

Good 6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

मध्यकालीन आर्यभाषाओं की तीसरी अवस्था के रूप में अपभ्रंश के अनेक उपादान आधुनिक हिंदी को प्राप्त है। इनमें भाषा के स्तर पर व साहित्यिक स्तर पर बहुआयामी प्रभाव दिखाई देते हैं।

भाषा व व्याकरणिक स्तर

- विभिन्न ध्वनियाँ ड़, ढ़ ऍ, ऑ आदि
- कृदंत क्रियाएँ
- संयुक्त क्रियाएँ
- परसर्गों का प्रयोग
- सर्वनाम व संख्यावाचक विशेषण।
- आदि।

साहित्य के स्तर पर योगदान

- कथ्य के स्तर पर
- शिल्प स्तर पर

① संवेदना / कथ्य के स्तर पर योगदान

(i) वीरगाथा काव्यों का विकास :- यह मूलतः अपभ्रंश से ही शुरू होकर हिंदी में आया है। पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो का प्रभाव आगे चलकर रीतिकालीन वीरकाव्य पर देखा जा सकता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) **चरित्रमूलक काव्यों का विकास** - पृथ्वीराज रासो से चली परंपरा ही आगामी हिंदी के प्रमुख चरित्रमूलक महाकाव्यों 'रामचरितमानस' आदि का विकसित रूप है।

(iii) **धर्म संबंधी साहित्य** :- अपभ्रंश के परम-चरिउ, महापुराण जैसे काव्यों का प्रभाव आगामी भक्तिकाल के धार्मिक साहित्य पर भी नज़र आता है।

(iv) **लोक-काव्य** :- बीसलदेव रासो, संदेश रासक जैसे काव्य लोककाव्य के स्तर पर अनूठे हैं। आगे चलकर 'ढोला मारू रा दूहा' पर भी इनका प्रभाव नज़र आता है।

(v) **नाथों की संधा भाषा** :- अपनी अंतस्साधनात्मक अनुभूतियों को प्रकट करने के लिये प्रयुक्त यह भाषा कबीर पर अपना प्रभाव डालती है-

नाथ :- "नाथ बोले अमृत वाणी
बरसै कंबल भीजै पाणि।"

कबीरदास :- "कबीरदास की उलटबांसी

Copyright - Drishti The Vision Foundation

बरसैगी कैवली भीजैगा पानि।"

② शिल्प के स्तर पर

(i) मात्रिक छंदों का प्रयोग :- गाहा, दूहा, छप्पय आदि छंद अपभ्रंश ~~से ही की ही~~ हिंदी को देन है।

(ii) काव्यरूप :- रास, फाग, चाँचरी, कुलक पद आदि काव्यरूप का बाद के कवियों पर प्रभाव पड़ा है-

तुलसीदास - 'रास' - रामलला नहछू

कबीरदास - फाग व चाँचरी

मीरा व सूरदास - पदों का प्रयोग।

(iii) दोहा-चौपाई की कड़वकबद्ध शैली भी अपभ्रंश द्वारा हिंदी के सूफी व राम भक्त कवियों में दिखाई पड़ती है।

(iv) काव्य-रूढ़ियाँ :- पृथ्वीराज रासो का बारहमास वर्णन हो, आकाशवाणी हो या अन्य काव्यों में निहित शुक-शुकी संवाद सभी अपभ्रंश से हिंदी को देन हैं।

V. good
12½

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

हिंदी भाषा में योगदान की दृष्टि से सेठ गोविंददास का योगदान अनन्य है।

प्रमुख योगदान
- प्रचार के स्तर पर
- पक्ष-समर्थन
- समाचार-पत्र
- राष्ट्रभाषा बनाने में।

① **प्रचार के स्तर पर** :- मात्र 16 साल की उम्र में जबलपुर में 'शारदा सदन' नामक पुस्तकालय की स्थापना हिंदी प्रचार हेतु की।

- इसके अलावा विभिन्न संगठनों से जुड़कर हिंदी प्रचार किया।

② **पक्ष-समर्थन** :- 1927 में 'कौंसिल ऑफ स्टेट' में पहली बार हिंदी भाषा का सवाल उठाया और उसे राज्य स्तर पर दर्जा देने की बात की। इससे पहले यह प्रश्न विधान मंडलों में उठा ही न था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

③ **समाचार-पत्रों के स्तर पर** :- जबलपुर से निम्न पत्रों का संपादन-

- जलसा
- लोकमत
- जयहिन्द

] → हिंदी भाषा के प्रचार हेतु।

④ **राष्ट्रभाषा बनाने में योगदान** :- संविधान सभा में कांग्रेस के व्हिप का उल्लंघन कर भी हिंदी के पक्ष में मतदान किया।

- हिंदी व हिंदुस्तानी के विवाद को शांत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- 1963 से शुरू हुए हिन्दी विरोधी आंदोलनों में संपूर्ण देश में घूम-घूमकर हिंदी के पक्ष में आवाज उठायी।

इस प्रकार सेठ गोविन्ददास का योगदान बहुआयामी है और इनका हिन्दी प्रेम अद्वितीय। इनका कथन है-

" जब हम अपना जीवन जननी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी, मातृभाषा हिन्दी के प्रति समर्पित करें तब हम हिन्दी के सच्चे प्रेमी कहे जा सकते हैं। xxxx हमारी देवनागरी भारत ही नहीं विश्व की सभी लिपियों में सबसे अधिक वैज्ञानिक है।"

Good 15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) सर्वनाम से क्या समझते हैं? सर्वनाम के विभिन्न भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

सर्वनाम से तात्पर्य है -'सबका नाम'। ये वे शब्द हैं जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं। इनके प्रयोग से वाक्य में संज्ञापदों का बारंबार प्रयोग नहीं करना पड़ता। उदाहरण -

- रमेश ने कहा था कि वह आज उसकी बहिन से मिलने जायेगा। (सर्वनाम प्रयोग)
- रमेश ने कहा था कि रमेश आज रमेश की बहिन से मिलने जायेगा। (बिना सर्वनाम के प्रयोग)

सर्वनाम के भेद

- पुरुष वाचक
- निश्चय वाचक
- अनिश्चय वाचक
- संबंध वाचक
- प्रश्न वाचक
- निज वाचक

① **पुरुष वाचक सर्वनाम** : हिंदी में तीन प्रकार के पुरुष स्वीकार किये गये हैं-

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष -	मैं	हम
मध्यम पुरुष -	तू	तुम
अन्य पुरुष -	वह	वे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम :- जो किसी संज्ञा पद के संबंध में निश्चयात्मकता व्यक्त करते हों।
उदा॰ - 'वही' पुस्तक चाहिये।
'यह' कलम दो।

(iii) अनिश्चय वाचक सर्वनाम :- संज्ञा के संबंध में अनिश्चयात्मकता का बोध - उदाहरण
• कोई है • कुछ तो चाहिये।

(iv) प्रश्न वाचक सर्वनाम :- संज्ञा के संबंध में प्रश्नवाचकता का बोध -
उदाहरण - कौनसी पुस्तक चाहिये?

(v) संबंध वाचक सर्वनाम :- मुख्य प्रयोग मिश्र वाक्यों में दो वाक्यों को जोड़ने में प्रयोग -
उदाहरण - जो पढ़ेगा वह सफल होगा।
जो जीता वही सिकन्दर।

(vi) निज वाचक सर्वनाम :- ये वे सर्वनाम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैं जो संज्ञा या क्रिया के संबंध में अपनेपन का बोध कराते हैं।

उदा० यह मेरी अपनी पुस्तक है।
यह मेरा स्वयं का काम है।

कुछ अन्य विशेषताएँ

- बिहारी व पूर्वी हिन्दी में मध्यम पुरुष में 'तू' का प्रयोग निंदनीय माना जाता है। [(तुम) का प्रयोग]
- कई स्थानों पर आदरणीय व्यक्तियों के लिये 'तुम' के बजाय 'आप' (बहुवचन) का प्रयोग।

इस प्रकार हिंदी की सर्वनाम व्यवस्था पूर्णतः सरल व वैज्ञानिक है एवं इसके नियम तार्किक हैं।

Good 9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) 'राजभाषा हिंदी' की वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु सुझाव दीजिये। 20

राजभाषा हिन्दी के विकास में बहुमंत्रालयी व बहुसांस्थिक प्रयासों के बावजूद इसकी प्रगति परिमाणात्मक अधिक गुणात्मक कम नज़र आती है।

प्रमुख कारण: स्थिति के
- आंशिक अनुवाद
- केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठकें न होना।
- त्रिभाषा सूत्र का क्रियान्वयन नहीं
- राजभाषा विभाग के पास शक्तियों का अभाव।
- हिन्दी का परीक्षाओं में कम प्रयोग

सुधार के सुझाव

(i) त्रिभाषा सूत्र का अक्षरशः क्रियान्वयन: ऐसा करके हम भाषायी एकता स्थापित कर सकते हैं। इसमें भी यह होना चाहिये कि उत्तर-भारत के राज्य पहल कर दक्षिण भारत या पूर्वोत्तर की भाषा सीखें।

(ii) राजभाषा विभाग को पूर्णतः शक्तियुक्त करना ताकि-

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- अपने कार्यों का उचित क्रियान्वयन कर सकें।
- अपूर्ण क्रियान्वयन पर दंड दे सकें।

(iii) केन्द्रीय हिन्दी समिति व अन्य संस्थानों की नियमित बैठक का आयोजन करना।

(iv) कार्यालय व प्रशासनिक स्तर

↳ अधिकारियों की पदोन्नति व वेतन वृद्धि हिन्दी प्रयोग पर आधारित हो।

↳ प्रशिक्षण की प्रक्रिया सरल व रोचक बनायी जाये।

(v) परीक्षा स्तर पर :-

- यू.पी.एस.सी आदि की परीक्षाओं में अनिवार्य हिन्दी प्रश्न-पत्र रखना।
- सिविल सेवा अधिकारियों के प्रशिक्षण में हिन्दी भाषा अनिवार्य हो।

(vi) अनुवाद व शब्दावली निर्माण स्तर

- यांत्रिक अनुवाद न कर अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों का वैसा ही प्रयोग करना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदा० - 'कंप्यूटर' को संगणक कहने के बजाय कंप्यूटर ही कहना।

• विधायी व तकनीकी शब्दावली सरल बनायी जाये।

(viii) हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक व तकनीकी विकास

• आधुनिक योगिक तकनीकों का विकास जैसे-
  - टेक्सट टू स्पीच।
  - स्पीच टू टेक्सट।
  - हिज्जे जाँचक
  - सिस्टम सॉफ्टवेयर आदि।

• भाषा में वैज्ञानिक साहित्य को बढ़ावा दिया जाये।

इन सभी उपायों से हिंदी भाषा का प्रायोगिक विस्तार व उपयोग में वृद्धि होगी और राजभाषा बनने के पथ पर इसकी स्थिति में भी सुधार होगा।

Good Att.

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'अपभ्रंश' की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

अपभ्रंश का शाब्दिक अर्थ है - 'भ्रष्ट भाषा'। अर्थात- इसका निर्माण व विकास संस्कृत भाषा के शब्दों के विकृत या भ्रष्ट होने से ही हुआ है।

इसके अलावा वैदिक संस्कृत से पालि, प्राकृत तक होते हुए अपभ्रंश के मध्यकालीन आर्यभाषा के रूप में विकास होने के क्रम में अनेक उपादानों से शब्दों को ग्रहण भी किया गया है।

प्रमुख शब्दकोशीय प्रवृत्तियाँ

- तद्भव शब्द
- विदेशी शब्द
- देशज शब्द

(i) तद्भव शब्द :- अपभ्रंश का विकास ही संस्कृत के सरलीकरण का परिणाम है। इसके अलावा शब्दों के द्वित्वीकरण, क्षतिपूर्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दीर्घीकरण, आदि स्वर लोप, आनुनासिकीकरण जैसी प्रक्रियाओं से तद्भव शब्दों का विकास हुआ है जैसे —

- कर्म — काम, • अद्य - आज,
- चक्र - चाक, • कार्य - कारज,
- सिंह - सींह।

(ii) विदेशी शब्द :- 11वीं व 12वीं शताब्दी तक अरबों के आक्रमण के कारण इसमें अरबी फारसी शब्दों का भी अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है व इसकी सामासिकता सिद्ध करता है।

उदा० - कमाल, रूमाल, दरबार, बकसीस, दीदार जैसे शब्द।

(iii) देशज शब्द :- देशज समूहों के संपर्क व उत्तर-पश्चिम भारत के नव-उदित जाट, आभीर जैसे समूहों के शासन में विकसित होने के कारण इसमें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देशज शब्दों का भी सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। उदाहरण -
- किल-किल, खुण-खुण, तड़पड़ई आदि।

(iv) अन्य स्तर
└ प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में अनेक शब्दों का के लिये एक ही शब्द प्रयोग का दिखाई देना भी है।
उदा० 'सप्त', 'शप्ति', 'सुप्ति' के लिये केवल 'सुत्त' शब्द का प्रयोग।

इस प्रकार अपभ्रंश की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों में ~~संस्कृ~~ संस्कृत के सरलीकरण, विदेशी तत्वों, देशज प्रयासों आदि का प्रभाव दिखता है।

9.5/15 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि के मानकीकरण के अनेक प्रयासों के बावजूद निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं। हालांकि इनमें से कई सुझावों का सिद्धान्ततः सरकार द्वारा मान लिया गया है किन्तु अभी भी व्यावहारिक प्रयोग नहीं हुआ है।

① ध्वनि के स्तर पर

(क) • विभिन्न भाषाओं में निहित ध्वनियों का समावेश किया जाना चाहिये। जैसे-

- सिंधी - ज़, ड़, द़, ब़, ग़
- असमिया - 'अ'
- दक्षिण भारतीय द्रविड़ भाषाएँ
  - ऐ, ओ (दोनों ह्रस्व स्वर)
  - ऩ, ऱ, ऴ, ऴ, ऩ आदि।

(ख) अंग्रेजी में 'ऍ व ऑ' की ध्वनियाँ ए व ऐ या ओ व औ की मध्यवर्ती है इन्हें चन्द्रबिन्दु (ॅ) लगाकर स्वीकार करना चाहिये।

(ग) अनुस्वार व अनुनासिक :- सामान्यतः पंचम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वर्ण के लिये अनुस्वार प्रयोग
- अनुस्वार समाप्त नहीं करना चाहिये
  - उन्मत, जघन्य शब्दों में प्रयोग।
- अ, आ मात्रा में चन्द्रबिन्दु किन्तु ए ऐ आदि में अनुस्वार प्रयोग।

(2) ~~अर्द्धस्वर~~ - संयुक्तस्वर | संयुक्त स्वर ~~अर्द्धस्वर~~
- खड़ी पाई युक्त वर्ण — खड़ी पाई हटाना
- द — द्व
- ट — ट्र

रेफ - यदि पहली ध्वनि - ऊपर (वर्ग)
- यदि बाद की ध्वनि - प्र, ट्र आदि प्रयोग।

(3) शिरोरेखा का प्रयोग किया जाना चाहिये

(4) वर्णिक द्विरूपता की समस्या :- निम्न वर्णों में बाद का रूप मान्य होना चाहिये।

ध - ध, भ - भ
झ - झ, ण - ण आदि।

(5) मात्रा व्यवस्था का प्रयोग जारी रखना चाहिये।

(6) संयुक्त वर्णों का प्रयोग जारी रखना चाहिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तनी पक्ष पर सुझाव

(i) हाइफन का प्रयोग
- द्वन्द्व समास में करना चाहिये (माता-पिता)
- तत्पुरुष में नहीं (नीलकमल)
- कठिन संधियों में किया जाये।

(ii) परसर्गों का प्रयोग :- अर्द्धविराम, पूर्णविराम का प्रयोग जारी रहना चाहिये।

(iii) विसर्ग प्रयोग :- जहाँ प्रचागतरूप से समाप्त वहाँ नहीं होना चाहिये
उदा० 'सुख-दुख'।

(iv) 'य' श्रुति व 'व' श्रुति : इनका प्रयोग नियम पर नहीं सामान्य उपयोग के आधार पर होना चाहिये।

इस प्रकार उपर्युक्त सुझावों के द्वारा निश्चित रूप से देवनागरी लिपि को अखिल भारतीय लिपि के रूप में विकसित किया जा सकता है

Good 9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(क) शृंगारिकता के धरातल पर रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कविता का अंतर

रीतिकाल की कविता मुख्यत: श्रृंगार की कविता है और कवियों द्वारा श्रृंगार के महत्व व 'रस-राजत्व' पर बल दिया गया है। इसी कारण विश्वनाथ प्रसाद सिंह द्वारा रीतिकाल का नामकरण 'श्रृंगार काल' भी किया गया था।

प्रमुख अंतर: रीतिबद्ध व रीतिमुक्त

(i) रीतिबद्ध कवियों में श्रृंगार साध्य है जबकि रीतिमुक्त कवियों में श्रृंगार के बजाय आंतरिक भावनाओं की व्यंजना अधिक है-

'अंग-अंग ~~नग~~ नग, जगमगति, दीपसिखा सी देह।'
(रीतिबद्ध)

"अति सूधो सनेह को मारग है,
जहँ नेकु सयानप बाँक नाहिं।"
(रीतिमुक्त)

(ii) रीतिबद्ध में संयोग। श्रृंगार का वर्णन अधिक है, और वह भी स्थूल व भोगमूलक है और आंगिक चेष्टाओं तक अधिक सीमित है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"गुलगुली गिल में गलीचा है, ××× (पद्माकर)
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।"

जबकि रीतिमुक्त काल में संयोग श्रृंगार है भी तो स्वाभाविक है और इनका प्रमुख विवेचन वियोग पर ही है-

"दैरिके हिजियौं, न हियौं घन आनंद (स्वाभाविक
कौवरे अंग सुजान बधू के।" संयोग)

"यह कैसो प्रेम न बूझी परै जो
संयोग न यों हूँ वियोग हेतु है।" [वियोग विरह]

(iii) रीतिबद्ध में भी वियोग का वर्णन है किंतु वह भावनामूलक नहीं बल्कि शिल्पगत सामर्थ्य का परिणाम प्रतीत होता है-

"इत आवत चलीजात उत, चली छ सातक हाथ
चढ़ी हिंडोरै सी रहै, लगी उसासनी साथ।"

इस प्रकार रीतिमुक्त कवियों का श्रृंगार वर्णन स्थूल, सामंती, भोगमूलक है तो रीतिमुक्त कवियों का सूक्ष्म, भावनामयी, वियोग-मूलक है।

उत्तम

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपने साहित्येतिहास ग्रंथ 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' के द्वारा आचार्य शुक्ल व आचार्य द्विवेदी जी के दृष्टियों का संश्लेषण किया है।

प्रमुख विशेषता

(i) इतिहास दृष्टि मुख्यत: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से प्रभावित है किंतु 'इतिहास' के बजाय 'संवेदना' शब्द के प्रयोग के कारण द्विवेदी जी का 'परंपरा तत्व' भी समाहित है।

(ii) भक्ति आंदोलन का उद्भव में 'देश म्लेच्छाक्रांत है' (वल्लभ का कथन) के उदाहरण से आचार्य शुक्ल की मान्यता का समर्थन तो कबीर के मूल्यांकन में आचार्य शुक्ल की मान्यताओं में संशोधन किया है।

(iii) साहित्य व विभिन्न कलाओं के संबंधों की पड़ताल :- रीतिकालीन कविता व अन्य

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कलाओं - चित्रकला, संगीत का संबंध।

(iv) मुक्तकों में 'दोहों' की तुलना 'फारसी' शायरी से की है।

(v) साहित्य में भारतीय संस्कृति व दर्शन की समाहित कर भक्ति-श्रृंगार के अन्तर्विरोधों को स्पष्ट किया है।

(vi) गद्य का चिंतनप्रधान तत्समी भाषा व पद्य की भावप्रधान तद्भव भाषा पर विचार किया है।

इस प्रकार चतुर्वेदी जी ने अपने ग्रंथ में पूर्ववर्ती इतिहास का सृजनात्मक संश्लेषण कर 'विरुद्धों का सामंजस्य' स्थापित किया है। भारतीय व विदेशी संस्कृति की टकराहट से जन्मा नवजागरण आंदोलन का विवेचन इनके साहित्येतिहास का सबसे मार्मिक प्रसंग है।

उत्तम
6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

अज्ञेय 'प्रयोगवादी' व 'नई कविता' के कवि हैं और इनकी कविता पर इलियट के विभिन्न सिद्धान्तों के साथ-साथ अस्तित्ववाद, सुखवाद, जैन बौद्धमत का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

प्रमुख काव्य - चिंता, भग्नदूत, असाध्यवीणा आदि।

काव्यानुभूति की विशेषता

(i) गैर रोमैंटिक भावबोध से कविता रचना व भावनाओं का संयम :-

"सुनो कवि! भावनाएँ नहीं हैं सोता,
भावनाएँ खाद हैं केवल।"

(ii) व्यक्तिवाद को महत्व व व्यक्ति की स्वतंत्रता की कामना :-

"हम नदी के द्वीप हैं,
हम बहते नहीं हैं,
क्योंकि बहना रेत होना है।"

(नदी और द्वीप कविता)

(iii) फ्रॉयड के 'मनोविश्लेषणवाद' का भी प्रभाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय की कविता पर नज़र आता है।

(iv) इलियट के 'परंपरा सिद्धान्त' का प्रभाव असाध्य वीणा पर नज़र आता है तो 'वस्तुनिष्ठ समीकरण' का सिद्धान्त 'शब्द और सत्य' कविता पर नज़र आता है।

(v) प्रतीकों व उपमानों को अत्यधिक महत्व क्योंकि मन: स्थितियों को स्पष्टत: विचारित करने में ये सहायक है।

(vi) जैन बौद्धमत का प्रभाव अंतिम समय में दिखाई देता है -

"श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं में
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
स्वयं शून्य को सौंप दिया था।" (असाध्य वीणा)

इस प्रकार अज्ञेय की काव्यानुभूति विविधता-युक्त व विकसनशील है जिसमें अन्त में 'सृजनात्मक रहस्यवाद' का तत्व भी नज़र आता है

अच्छा है 6

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'आंचलिक कहानी' का परिचय

कृपया इस स्थान ... कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this ...)

आंचलिक कहानी वस्तुतः आंचलिक उपन्यास का ही लघु रूप है, जो स्वतंत्रता के समय व उसके बाद की कुछ कहानियों के द्वारा साहित्य जगत में आई।

प्रमुख विशेषता

- अंचल का नायकत्व।
- भौगोलिक व विस्तृत सांस्कृतिक वर्णन - वातावरण सघन
- विचारधारा तटस्थता।
- अंचल के समस्त यथार्थ को बिना किसी पूर्वाग्रह के कहानी में उभारना।
- अंचल के अनुरूप देशी, ग्राम्य भाषा का प्रयोग
  - ध्वन्यात्मकता।
  - गीत-संगीत।
  - देशी लोकभाषा के मुहावरों का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रमुख कहानीकार व कहानी :- आंचलिक उपन्यासों की भांति यहां भी 'रेणु' ही आंचलिक कहानियों के प्रतिनिधि रचनाकार नज़र आते हैं।

- फणीश्वरनाथ रेणु - तीसरी कसम
  - रसप्रिया
  - पंचलैट।] कहानी
- मार्कण्डेय - गुलरा के बाबा
  हंसा जाई अकेला।
- शिवप्रसाद सिंह - दादी मां।

अतः उपर्युक्त उदाहरणों के द्वारा विविध हिंदी कहानीधाराओं में आंचलिक कहानी का भी प्रमुख स्थान समझा जा सकता है।

Good 6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) 'पल्लव की भूमिका' का महत्त्व

हिंदी साहित्य में 'सुमित्रानंदन पंत' के द्वारा रचित 'पल्लव की भूमिका' को वही स्थान प्राप्त है जो पश्चिमी स्वच्छंदतावाद में वर्ड्सवर्थ की 'लिरिकल बैलेड्स' को। इसे छायावाद का घोषणापत्र भी माना जा सकता है।

प्रमुख महत्व

(i) खड़ी बोली की काव्यभाषा के रूप में स्थापना - पंत ने कठोर शब्दों में कहा है - "अभिव्यक्ति को अब ब्रज की छींटदार चोली जो कि फट चुकी है, नहीं ढक सकती। अब उसे क्रान्तिकारी के तेवर वाला चोला चाहिये।"

(ii) छायावादी कविता में निहित प्रेम, सौन्दर्यबोध, प्रमुख विशेषताओं पर विचार।

(iii) व्यक्ति की आंतरिक अनुभूतियों को महत्व प्रदान करना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(iv) छंदों, भाषा व अलंकारों पर विचार :-

कविता में नियमों के पूर्णतः पालन का विरोध किया और प्रतीकात्मकता, लाक्षणिकता के साथ रूप को व्यक्त करने में अलंकारों की महत्ता प्रतिपादित की।

" अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिये ही नहीं हैं वरन- वे भावाभिव्यक्ति के विशेष ~~द्वार~~ द्वार हैं।"

(v) कविता के माध्यम से वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य चेतना, कल्पना को महत्व देना।

उपर्युक्त सभी बिन्दुओं के कारण निश्चित व निर्विवाद रूप से छायावाद व भावी साहित्य में "परिमल की भूमिका" का महत्व असंदिग्ध है।

V. Good

6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचन्द की कहानियों के रचना-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द का आगमन हिंदी कहानी कला में एक क्रान्ति है और प्रेमचन्द ने संवेदना व शिल्प के स्तर पर कहानियों की विषय-वस्तु वस्तु ही नहीं बदली, बल्कि उनका कायाकल्प भी कर दिया।

प्रेमचन्द की कहानियों का शिल्प

(1) कथानक योजना :- सामान्यत: सरल - कथानक जो कि आदि मध्य अंत में बंटा हुआ। उदा०- बूढ़ी काकी, बड़े घर की बेटी।

- कई कहानियों में कथानक टूट गया है (मुख्य रूप से अंतिम समय की कहानियाँ) उदा० 'कफन'।
- कई कहानियों में एक कथानक में कई कहानियाँ चलती रहती है- उदा० अलग्योझा।

(2) भाषा शैली :- प्रेमचन्द की भाषा राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द की परंपरा की हिंदुस्तानी भाषा है जो तद्भव व सहज है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) मुहावरे - कहावतों का प्रयोग :
- "पाँव सीधे न होते थे, गर्दन कटने लगी।"
- "रानी सारन्धा आन बरशान देने वालों में से न थी।"

(ख) उपमा शैली का प्रयोग
- "हुक्का तो किसी प्रेमी के हृदय की भाँति निरंतर जलता ही रहता है।"

(ग) सूत्र वाक्यों का प्रयोग
- "मन का मैल धोने के लिये नयन जल से उपयुक्त वस्तु नहीं।"

(घ) शैली के स्तर पर प्रयोग
- आत्मकथात्मक शैली - 'गिला'।
- 'मैं' शैली - 'मुक्त का प्रभु'।

③ चरित्र योजना : सामान्यतः वर्गगत चरित्र है जैसे बूढ़ी काकी वृद्धों का प्रतिनिधित्व करती है तो पूस की रात का हलकू सामान्य किसान का।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- कई कहानियों में पात्रों की वैयक्तिक विशेषताएँ भी आई हैं जैसे -
  - 'ईदगाह' का 'हामिद'
  - जिला का नासिका

↳ मनोविज्ञान का प्रयोग :- प्रेमचन्द ने स्वाभाविक किया है। उदाहरण -
- "आनंदी स्त्रियों के स्वाभावानुसार रोने लगी क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते हैं।" (नारी मनोविज्ञान)
- नया विवाह में भी नारी मनोविज्ञान

(4) लेखक का दृष्टिकोण :- प्रेमचन्द किस्सागो शैली के रचनाकार हैं और सामान्यतः परिदृश्यात्मक शैली का प्रयोग करते हैं किन्तु जहाँ घटनाएँ प्रमुख हो। वहाँ दृश्यात्मक शैली दिखाई देती है।

इस प्रकार प्रेमचन्द की कहानियाँ शिल्प के स्तर पर अद्वितीय हैं और आगामी कहानियों के लिये शैल्पिक आधार बनाती है।

उत्तम

12½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय के यात्रा-साहित्य का परिचय देते हुए उसके वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में सत्यदेव पारिव्राजक, राहुल सांकृत्यायन जैसे यात्री-साहित्यकारों की पंक्ति में अज्ञेय का नाम भी शामिल है। अज्ञेय का यात्रा साहित्य मूलतः दो संकलनों में रचा गया है-

(i) एक बूँद सहसा उछली।
(ii) अरे यायावर रहेगा याद।

(i) एक बूँद सहसा उछली :- यह यात्रा-वृतान्त मूलतः अज्ञेय के विदेश में भ्रमणों का संकलन है।

- अज्ञेय ने यूरोप के विभिन्न देशों, शहरों का वर्णन इस संकलन में किया है।

(ii) अरे यायावर रहेगा याद :- अपने उन्मुक्त मन व भ्रमणशील प्रकृति के अनुरूप देश में भ्रमण के विभिन्न वृतान्त इस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संकलन में समाहित हैं।

वैशिष्ट्य

(i) कथ्य: अज्ञेय का वृतान्त केवल यात्रा का वर्णन न होकर संपूर्ण जीवन-गाथा की भाँति सभी पक्षों को समेटता है।
- अज्ञेय ने 'एक बूँद सहसा उछली' में पेरिस, बर्लिन, मास्को आदि की संस्कृति, भाषा, त्यौहार, पर्व आदि का अत्यन्त रोचक चित्र प्रस्तुत किया है।
- उनकी यात्रा के पन्ने केवल साहित्य तक नहीं बल्कि दर्शन को भी समेटते हैं।
उदा॰ जैन बौद्धमत पर वर्णन।

(ii) भाषा: अज्ञेय की भाषा 'शब्दों की मितव्ययता' की भाषा है अपने गद्य में चिंतनपरक भाषा के अनुरूप जहाँ तत्सम शब्दों का प्रयोग वे करते हैं किन्तु यहाँ उनके यात्रा - साहित्य की भाषा सरस व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सहज है।

(ii) भाषा में यूरोपीय या स्थानीय भाषा (यात्राकालीन स्थल) के शब्दों का भी प्रयोग दिखाई देता है।

इन सभी के अलावा अपने गैर-रोमैंटिक बोध के अनुरूप अज्ञेय के यात्रा-साहित्य में अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए सौंदर्य का यथातथ्य चित्रण मिलता है। जैसा कि उन्होंने 'बेलस के गान' आदि का किया है।

इस प्रकार अपनी कविता की तरह अज्ञेय के यात्रा साहित्य भी अनूठे व विशिष्ट हैं।

V. good 9/15

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) छायावादी कविता के बिंब-सौंदर्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

छायावादी कविता अपनी भाषा में प्रयोगों के लिये विख्यात है। इनकी भाषा में कोमलता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता तो दिखाई देती ही है, बिम्ब प्रयोग की दृष्टि से भी यह कविता अत्यन्त सुंदर है।

बिम्बों का पहला स्तर कोमल व भयंकर बिम्बों का है। जहाँ प्रकृति या नारी सौंदर्य के कोमल बिम्ब भी दिखाई देते हैं तो कामायनी के चिंता सर्ग या 'राम की शक्तिपूजा' के भयंकर बिम्ब भी -

"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लंबी काया उन्मुक्त।" (कोमल बिम्ब)

"है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार।"
(कठोर या भयंकर बिंब)

बिंबों का दूसरा स्तर वहाँ दिखता है जहाँ बिम्ब विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों के स्तर पर सक्रिय होते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

है - जैसे दृश्य बिम्ब, स्पर्श बिम्ब, श्रव्य बिम्ब। एक से अधिक ज्ञानेन्द्री पर सक्रिय बिम्ब संश्लिष्ट बिम्ब कहलाते हैं।

• "तुम्हारे छूने में था प्राण,
संग में पावन गंगा स्नान।" (स्पर्श बिम्ब)

• "मेघमय आसमान से उतर रही है,
संध्या सुंदरी परी सी
धीरे, धीरे, धीरे।" (दृश्य बिम्ब)

बिम्बों का तीसरा स्तर है - लक्षित व उपलक्षित बिम्बों का। लक्षित बिम्ब सामान्य बिम्ब होते हैं जबकि किसी अमूर्त भाव को बिम्बों में दर्शाना हो तो व्यंजना का प्रयोग कर उपलक्षित बिम्ब की सृजना करनी पड़ती है -

"कामायनी कुसुम वसुधा पर पड़ी,
न वह मकरन्द रहा,
एक चित्र बस रेखाओं का
है उसमें अब रंग कहाँ।"

(उपलक्षित बिम्ब)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी कविता का एक प्रयोग ऐसा है जिसका बिम्ब प्रयोग अत्यन्त जटिल है। इस बिम्ब प्रयोग की परिभाषा ही नहीं है। और, सामान्यत: आलोचक इसे जटिल बिम्ब कहकर ही संतुष्ट हो जाते हैं। 'राम की शक्ति पूजा' का यह उदाहरण द्रष्टव्य है।

"खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन।"

इस प्रकार छायावाद का पूरा काव्य अनूठे बिम्बों से सजा है जिसमें कोमल, भयानक, एकल, संश्लिष्ट, लक्षित, उपलक्षित सभी बिम्ब मिल जाते हैं।

उत्तम

9½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation